UGC APPROVED SR NO. 49366

SRJIS

ISSN -2278-8808

GLOBALLY INDEXED

IMPACT FACTOR SJIF 2016 6.177

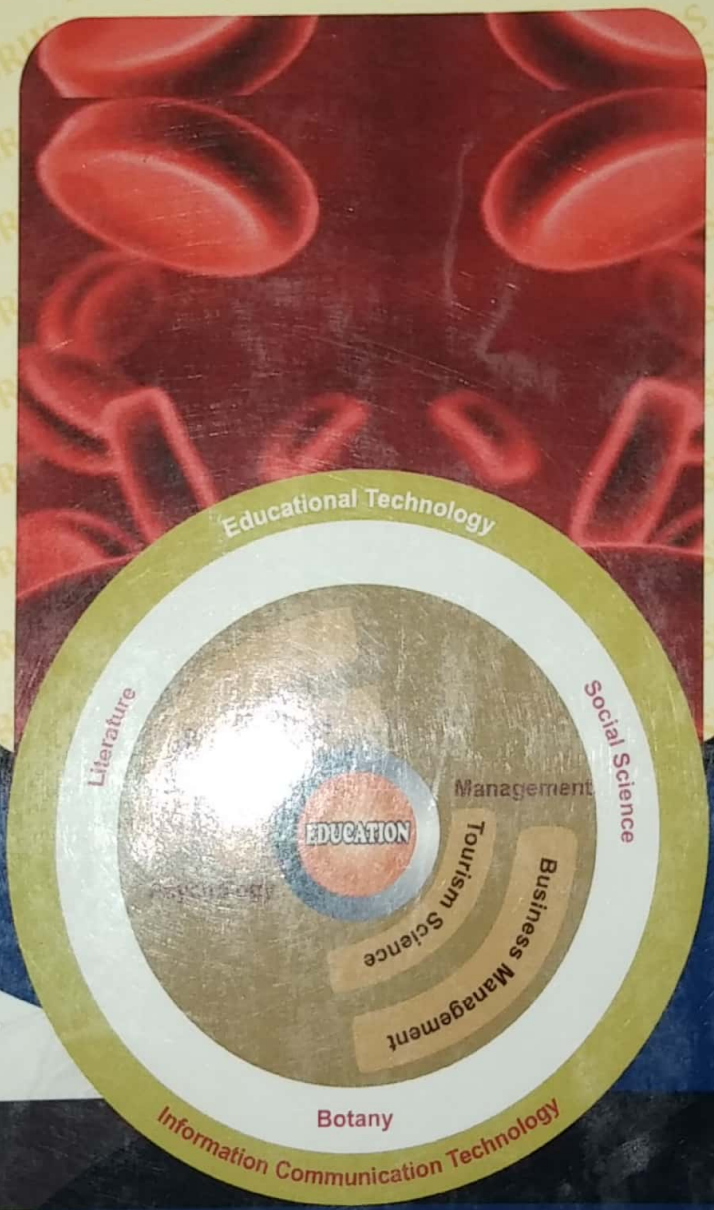

An International Peer Reviewed

Referred Quarterly

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

OCT-DEC, 2017. VOL. 6, ISSUE -33

EDITOR IN CHIEF : YASHPAL D. NETRAGAONKAR, Ph.D.

Scanned with CamScanner

माध्यमिक स्तर पर अधिगम भार की व्यापकता, क्षमता संवर्धन की चुनौतियाँ एवं संभावनाएं

रजनीश अग्रहरि

पी. एच-डी. शोधार्थी, शिक्षा विद्यापीठ, म.गाँ.अ. हि.वि.वि., वर्धा

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर वर्तमान समय में उनके अधिगम क्षमता से अधिक सीखने के लिए दिए जा रहे विभिन्न प्रकार के भार (दबाव) की जांच-पड़ताल करने का प्रयास किया गया है, साथ ही विद्यार्थियों पर पड़ने वाले विभिन्न प्रकार के अधिगम भार जैसे- विद्यालय एवं शिक्षण कार्य से संबंधित, माता-पिता की आकांक्षा से संबंधित, पाठ्य सहगामी क्रियाओं एवं गृह कार्य से संबंधित अधिगम भार की व्याख्या करने का प्रयास किया गया है | इस अधिगम भार का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं उनके स्वयं की रुचियों पर किस प्रकार प्रभाव डाल रही है तथा विद्यार्थियों के शारीरिक, सामाजिक, शैक्षिक, नैतिक, एवं संवेगात्मक विकास पर कितना एवं किस प्रकार का प्रभाव पड़ रहा है, उसके विश्लेषण का भी प्रयास किया गया है|

पारिभाषिक शब्द (Key word) - *अधिगम, अधिगम भार, माध्यमिक स्तर, माता-पिता की आकांक्षा, सामाजिक विकास, शारीरिक विकास, शैक्षिक विकास।*

प्रस्तावना - रचनात्मक परिपेक्ष्य में सीखना ज्ञान निर्माण की एक प्रक्रिया है, वर्तमान समय की स्कूलिंग पद्धति ने छात्रों के सीखने की प्रक्रिया को एक निश्चित फ्रेमवर्क में बाधने का प्रयास किया है, सीखने और अनुदेशन के अधिकतर प्रारूप इस सिद्धांत पर आधारित होते है कि छात्रों को कितना अधिक से अधिक ज्ञान या सूचना प्रदान कर दिया जाये, जिससे उनका अधिकतम बौद्धिक विकास हो सके | इस सन्दर्भ में प्रो. यशपाल ने कहा था कि बच्चे पर समझ का बोझ ज्यादा है। किताब मोटी होने से बोझ नहीं होता। हमें देखना चाहिए कि उसका मस्तिष्क कितना समझ सकता है। अध्यापक को देखना चाहिए कि बच्चा कितना ग्रहण कर पाता है , उसी हिसाब से उसे पढ़ाया जाए | बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करने की इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में बिना इस पक्ष पर गौर किये की उनकी 'अधिगम धारण' की क्षमता कितनी है और उन पर समस्त शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक प्रक्रिया का कितना अधिगम भार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रदान किया जा रहा है, बिना इन महत्वपूर्ण तथ्यों पर ध्यान दिए छात्रों का मानसिक, बौद्धिक, एवं दैहिक शोषण किया जा रहा है, जिससे उनका शैक्षिक एवं सामाजिक निष्पादन प्रभावित हो रहा है | उपरोक्त विचारो के संदर्भ में इस शोध अध्ययन के माध्यम से माध्यमिक स्तर के छात्रों की 'अधिगम धारण' क्षमता और उन पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से डाले जा रहे अधिगम भार की पहचान एवं उनके स्तरों का आकलन करना है| औपचारिक अधिगम पद्धति का मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों में अन्तर्निहित क्षमताओं का समुचित विकासकरना और उन्हे समाज के एक सक्रिय सदस्य के रूप में स्थापित करना है, विद्यालय एवं अन्य शैक्षिक संस्थाओं को इसी प्रक्रिया के उत्प्रेरक के रूप में देखा जाता है लेकिन यह एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है कि बजाय मानव संसाधन को विकसित करने के विद्यालय विद्यार्थियों के लिए बोझ का पर्याय बनते जा रहे है | भारत की वर्तमान विद्यालयी शिक्षा इन विभिन्न आयामों पर असंतुष्ट और निराश करती है, शिक्षा और शिक्षा व्यवस्था से जुड़े सभी पक्षों जैसे- छात्र, माता-पिता, शिक्षक, नीति निर्माता, शिक्षा प्रशासक ने समय-समय पर इस संदर्भ में अपनी चिंता व्यक्त की है, यहाँ तक कि शिक्षा के क्षेत्र में गठित विभिन्न कमीशन,

Scanned with CamScanner